# एक ऐसे बंधन से मुक्त हों जो सर्व बंधनों से मुक्ति दिलावे

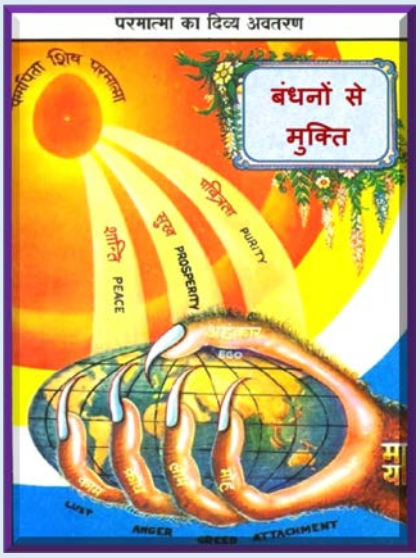


बंधन किसी को पसंद नहीं है| हर व्यक्ति चाहता है, मेरा जीवन सर्व प्रकार के बन्धनों से या गुलामी से मुक्त हो जाए| आकाश में उड़ते एक मुक्त पक्षी की तरह मेरा जीवन भी बंधनों से मुक्त, खुशियों से भरपूर हो| मैं अपनी इच्छा अनुसार अपना जीवन व्यतित करूँ| लेकिन यदि विश्व की वर्त्तमान परिस्थिति पर नजर दौडाएं, तो शायद ही एसा कोई व्यक्ति होगा जो सभी बंधनों से मुक्त हो| अनेक बंधनों में फंसा हुआ आज का मानव जैसे कि बंधनों से मुक्त होने के लिए छटपटा रहा हो ऐसा लगता है| वैसे देखा जाए तो आज विश्व की परिस्थिति एसी है की चाहे जड़ वस्तु हो या चेतन हस्ती हो वा फिर वह व्यक्ति हो सब किसी न किसी दबाव में वा किसी न किसी के प्रभाव में है| पदार्थ के अणु से लेकर उच्चतम चेतनावाली मनुष्य आत्मा तक प्रत्येक निर्जीव एवं सजीव की कोशिश मुक्ति के लिए होती है| प्रत्येक की वृत्ति अनंत की ओर जाने की होती है|

ऐसी इच्छावश साधु-संत तथा धर्म-प्रेमी लोग प्रार्थना करते हैं, साधना करते हैं, चोर-लुटेरे चोरी करते हैं, राजनेता लोग भ्रष्टाचार करते हैं या व्यापारी लोग करचोरी और बेईमानी भी करते हैं| यदि इस दिशा में किए गए प्रयास निष्काम या निस्वार्थ भाव से और सर्व के मंगल की कामना से किए हुए होंगे तो वे प्रयास सच्चे सिद्ध होंगे और हम सच्चे अर्थ में मुक्ति का एहसास कर सकेंगे, परंतु यदि प्रयास की दिशा गलत होगी, स्वार्थ-संपन्न तथा दुष्ट भावनावाली होगी तो वह प्रयास स्वयं का तथा दूसरों का अहित करनेवाला साबित होगा| लेकिन इन दोनों प्रकार के प्रयासों में 'मुक्ति के लिए संघर्ष' ही मुख्य आवेग है **(Impulse is same 'Struggle for freedom')** | वास्तव में मुक्ति ही जागृत या अजागृत, चैतन्य या निर्जीव-प्रत्येक का प्राकृतिक लक्ष्य है| फर्क सिर्फ इतना ही है कि स्वंत्रता प्रेमी आत्माएं अपना प्रयास आत्म दर्शन करके तथा परमात्मा के साथ अनुसंधान स्थापित करके अनंत का, परम शांति का तथा परमानंद का अनुभव कर सच्चे अर्थ में मुक्ति का अनुभव करते हैं, जब कि एक चोर या भ्रष्टाचारी के प्रयास का लक्ष्य स्वतंत्रता होते हुए भी वह और ज्यादा बंधन में फंसता जाता है|

सच्चे अर्थ में मुक्ति अर्थात क्या? सच्ची मुक्ति किसे कहते हैं? मुक्ति की सच्ची अवधारणा वा संकल्पना क्या है- इस विषय में अनेक मान्यताएं और विचारधाराएं अस्तित्व में हैं| कई लोग ऐसा मानते है कि मैं जब और जहाँ जो भी इच्छा हो, वह करने के लिए यदि मुक्त हूँ तो यही मुक्ति है| हमारे शास्त्रों में भी मुक्ति की एक व्याख्या एसी है जो हमें सोचने को मजबूर कराती है| श्रीमद भगवदगीता या विश्व के कई सारे अन्य धर्मो के सन्दर्भ में देखें तो पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेला जा रहा यह विश्व नाटक एक चक्र के रूपमें अनादि समय से चलता आया है और अनंत काल तक चलता रहेगा| इस विश्व नाटक के चक्र में हम सब मनुष्य आत्माएं एक्टर्स हैं, जो जन्म-मृत्यु के चक्र में आकर सुख-दु:ख का यह अनादी नाटक खेलते रहते हैं| इसके बारे में कई लोगों का ऐसा मानना है कि 'हमारी आत्मा के इस सुख-

दुःख की अनुभुतिवाले, साथ-साथ जन्म-मृत्यु के चक्रवाले इस पार्ट से मुक्ति- यही मुक्ति है| कई लोग आत्मा के ब्रह्म में समा जाने को मुक्ति मानते हैं| यह कितना यथार्थ है, यह सोचने का विषय है| एक तरफ हम ऐसा मानते हैं कि 'यह विश्व नाटक अनादि , अविनाशी, शाश्वत और सनातन है, जिसमें हमारा अर्थात मनुष्य आत्माओं का एक्टर्स के रूप में पार्ट तथा परमात्मा का डायरेक्टर के रूप में पार्ट अनादि, अविनाशी है| आत्मा का अमरत्व भी उसके इस अनादि, अविनाशी जन्म-मृत्यु के पार्ट में ही समाया हुआ हैं|' गीता में तो स्पष्ट लिखा है कि 'जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है और जिसकी मृत्यु हुई है, उसका जन्म भी निश्चित है|' इसलिए इस जन्म मृत्यु वाले पार्ट में से बाहर निकल जाना अर्थात उससे मुक्त हो जाना और उसे ही मुक्ति मानना, क्या यह एक विरोधाभास नहीं है?

इस विश्व नाटक की अनंतता तथा अविनाशीता का आधार नाटक के एक्टर्स मनुष्य आत्माओं के तथा डायरेक्टर परमात्मा के अनादि -अविनाशी पार्ट में समाया है| मनुष्य आत्माओं का इस विश्व नाटक में पार्ट ही उसके अस्तित्व का असली कारण है| आत्मा के अस्तित्व का महत्त्व भी उसके इस अविनाशी पार्ट में समाया हुआ है इसलिए जन्म मरण के चक्र में से मुक्ति की संकल्पना या विचारधारा को ही योग्य नहीं कह सकते|

तो फिर सच्ची मुक्ति क्या हैं? मुक्ति की सत्य परिभाषा क्या है? आइए, इसको समझने का प्रयास करें| इस सृष्टि नाटक का चक्र सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग, ऐसे चार युगों का है| कलियुग के अंत में चक्र पूरा होने पर सतयुग के आरंभ से उसका फिर पुनरावर्तन होता है| इस चक्र के सतयुग तथा त्रेतायुग का हमारा पार्ट संपूर्ण पवित्र अर्थात विकारों और विकर्मों से मुक्त होता है अर्थात वहाँ संपूर्ण सुख, शांति और समृद्धि होती है| वहाँ कोई वस्तु अप्राप्त होती ही नहीं| वहाँ आत्मा को कोई व्यक्ति या वस्तु का कोई बंधन नहीं होता| इसलिए उस समय को आत्मा की जीवन मुक्त अवस्था कहा जाता है और वही सच्ची मुक्ति है| परंतु द्वापरयुग शुरू होते ही हम अपनी आत्मिक स्मृति को भूलकर देहभान में आ जाते हैं| देहभान में आने के कारण हम विषय-विकारों के वशीभूत होते हैं| काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, स्वार्थ, इर्ष्या, इत्यादि से ग्रस्त हो जाते हैं और उनके प्रभाव में अनेक विकर्म कर बैठते है| उसके परिणाम स्वरूप हम अनेक प्रकार के विकारों के बंधन में तथा अनेक व्यक्तियों के साथ कर्म बंधन में बंध जाते है|

ऐसे कलियुग के अंतिम समय पर, अति धर्मग्लानि के समय पर अवतरित होने के गीता में दिए गए अपने वचन अनुसार परमात्मा धरती पर अवतरित होते है| और हमें सत्यज्ञान तथा राजयोग की शिक्षा देते हैं| जो जो आत्माएं यह ज्ञान तथा योग की शिक्षा का अभ्यास करते हैं और परमात्मा की दी गई श्रीमत का पालन करके विषय-विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं और अपने विकार्मो का विनाश करते हैं, वे आत्माएं सर्व बंधनों से मुक्ति प्राप्त करती हैं| राजयोग के अभ्यास में आत्मा का परमात्मा के साथ संबंध स्थापित होता है और आत्मा परम शांति, सुख, आनंद, प्रेम, शक्ति का सहज अनुभव करती है| यही आत्मा की सच्ची मुक्त अवस्था है, इसलिए सच्चे अर्थ में हमें मुक्ति का एहसास करना हो तो परमात्मा द्वारा सिखाए गए राजयोग का अभ्यास करके विकर्मो तथा विकारों से मुक्त होना है| साथ साथ पुरुषार्थ कर आनेवाली सतयुगी दुनिया में हमारे दिव्य जन्मो को सुनिश्चित करना है और जीवन होते हुए भी सच्ची जीवनमुक्त अवस्था को पाना है| परमात्मा के सिखाए हुए इस राजयोग

के प्रशिक्षण के लिए आप अपने नजदीक के ब्रह्माकुमारीझ के किसी सेवाकेन्द्र की मुलाकात कर सकते हैं|

------ॐ शांति------

**बी.के.प्रफुलचंद्र**

**(M) +91 98258 92710**